जलियां वाले बाग का काण्ड

ए. एस. बलगीर

22.04.1988.

13 अप्रैल 1919 बैसाखी का दिन था । उस समय हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था । हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी जलियां वाले बाग में एकत्रित हुए थे । यह जगह हरमिन्दिर साहब अमृतसर के पास है । जलियां वाले बाग के चारों तरफ ऊंची दीवारें हैं और वहां से भाग कर बाहर जाना मुश्किल है । उन दिनों अमृतसर में लोगों के इक्ट्ठे होने पर पाबन्दी लगी हुई थी । अंग्रेज सरकार यह नहीं चाहती थी कि भारतीय लोग एकत्रित होकर आजादी की बात करें या कोई ऐसा जलूस निकालें । उन दिनों जनरल डायर नाम के सेनापति अमृतसर में मौजूद थे और वो तुरन्त गोरखा रेजीमैंट की टुकड़ी लेकर जलियां वाले बाग में पहुँच गये यहां पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी । आते ही जनरल डायर ने लोगों की भीड़ पर गोलियां चलाने के आदेश दे दिये जिससे बहुत लोग गोली का शिकार होकर मर गये । इसमें कई बूढ़े, जवान, औरतें तथा बच्चे भी शामिल थे जो गोली का शिकार हुए । जलियां वाल बाग में एक कुँआ था बहुत से लोग उसमें कूद-कूद मर गये । काम समाप्त करके जनरल डायर जब वापिस आये तो चीफ खालसा दीवान संस्था ने उसे पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया । यह लोग हमेशा अंग्रेज सरकार के पिट्ठू थे और भारतीय होने के बावजूद भी अंग्रेजों अंग्रेजों की इज्जत करते थे ।

जलियां वाले काण्ड से सारे भारत में निःशस्त्र लोगों पर अंधाधुंध गोली चलाये जाने से निराशा फैल गयी और सब लोगों पर बहुत बुरा असर पड़ा । टैगोर ने अपना "सर" का खिताब अंग्रेज सरकार को वापिस कर दिया । कई लोगों ने सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिये इससे आजादी की लहर पूरी तरह से और तेज हो गयी ।महात्मा गांधी जी ने कहा कि "भारतीय लोगों ने आजादी की पहली लड़ाई जीत ली है" ।

बाद में सरदार उधम सिंह ने लंदन जाकर छुप-छुप कर जनरल डायर को एक भरी सभा में भाषण दे देते समय गोली से मार दिया और भारत की इज्जत बचाई । अंग्रेजों ने उधम सिंह को फांसी देकर मार दिया ।

शिक्षा :

1. हमें कभी निःशस्त्र लोगों पर गोली नहीं चलानी चाहिये ।
2. जानबूझकर बेवकूफ आदमी को मान सम्मान देना अपनी मूर्खता, कायरता और बेशर्मी दिखाने वाली बात होती है । इससे बुरे आदमी का हौंसला और बढ़ता है ।
3. मौत कई तरह से आती है मगर देश की इज्जत बचाने के लिए मरना बहादुरी माना जाता है ।